

चौधरी चरणसिंह उत्तर प्रदेश के दो बार मुख्यमंत्री कैसे बने, पूरी गाथा pdf

वर्तमान में जिस तरह से भारतीय राजनीति तथा राजनैतिक दल जिस तरह से नफरत की राजनीति का एजेंडा फैलाते हैं उसको देखकर ऐसा लगता है आने वाले कुछ वर्षों में, भारत जैसे लोकतंत्र देश में लोकतंत्र खत्म हो जायेगा लेकिन यदि पूर्व के राजनैतिक दल या नेता ऐसे नहीं थे यहाँ तक कि किसी नेता को तो किसानों का मसीहा भी कहा गया है इसलिए इस लेख में उस मसीहा प्रधानमंत्री के बारे में चर्चा करेंगे जिनका नाम चौधरी चरणसिंह है।

चौधरी चरणसिंह का प्रारंभिक जीवन :-

इनका जन्म 23 दिसंबर 1902 को ब्रिटिस भारत में आगरा और अवध के संयुक्त प्रांत के उत्तर-पश्चिमी भाग के रोहिलखंड क्षेत्र में मेरठ जिले के नूरपुर गाँव में हुआ था जोकि वर्तमान में विजनौर जिला, उत्तर प्रदेश, भारत में आता है। शिक्षा के दौरान ऐसा कहा जाता है कि यह एक अच्छे विध्यार्थी रहे तथा उन्होंने वर्ष 1925 में आगरा विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ़ आर्ट्स (एम्ए) की डिग्री और 1926 में कानून की शिक्षा प्राप्त की उसके बाद 1928 में गाजियाबाद में एक सिविल के रूप में अभ्यास शुरू किया।

फरवरी 1937 में वह 34 वर्ष की आयु में छपरौली (बागपत) निर्वाचन क्षेत्र से संयुक्त प्रांत की विधान सभा के लिए चुने गये थे तथा 1938 में, इन्होंने विधानसभा में एक कृषिउपज बाजार विधेयक पेश किया था।

स्वतंत्र भारत के बाद चौधरी चरणसिंह का इतिहास :-

- 1- चरण सिंह ने सोवियत शैली के आर्थिक सुधारों पर जवाहरलाल नेहरू का विरोध किया, रिसर्च बताते हैं इनका विचार था कि सहकारी फार्म भारत में सफल नहीं होंगे। एक किसान का बेटा होने के नाते, इनका मानना था कि कृषक बने रहने के लिए स्वामित्व का अधिकार किसानों के लिए महत्वपूर्ण है तथा वह हमेशा किसान स्वामित्व की व्यवस्था को संरक्षित और स्थिर करना चाहते थे।
- 2- उन्होंने 1967 में कांग्रेस पार्टी छोड़ दी और अपनी खुद की राजनैतिक पार्टी, भारतीय क्रांति दल बनाई। राज नरायण और राम मनोहर लोहिया की मदद और समर्थन से वह 1976 में और 1976 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने।
- 3- उन्होंने मोरारजी देसाई के नेतृत्व वाली जनता सरकार में उप- प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, और वित्तमंत्री के रूप में कार्य किया।

चौधरी चरणसिंह का पहला कार्यकाल मुख्यमंत्री के तौर पर (1967-68):-

चरण सिंह और संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के बीच विवाद तब सार्वजनिक हो गए जब एसएसपी ने अंग्रेजी हटाओ का आंदोलन शुरू करने का फैसला किया और इस आंदोलन के दौरान इसके दो मंत्रियों ने गिरफ्तारी दी | एसएसपी 5 जनवरी 1968 से हट गये तथा 17 फरवरी 1978 को, चरण सिंह ने राज्यपाल बेजवाड़ा गोपाल रेड्डी को स्तीफा सौफ दिया और 25 फरवरी 1968 को उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया |

चौधरी चरणसिंह का दूसरा कार्यकाल मुख्यमंत्री के तौर पर(1970):-

- 1- 18 फरवरी 1970 को चरण सिंह इंदिरा गांधी की कांग्रेस (आर) की मदद से दूसरी बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने |
- 2- 1 अक्तूबर 1970 को, कीव के वी. वी. गिरि. जो वहां के दौरे पर थे, द्वारा उत्तर प्रदेश पर राष्ट्रपति शासन लगाया था | ठीक दो सप्ताह बाद उत्तर प्रदेश विधान सभा को वापस बुलाने के साथ, त्रिभुवन नारायण सिंह को सदन का नेता चुना गया और मुख्यमंत्री बने | कांग्रेस (ओ), भारतीय जनसंघ, स्वतंत्र पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी के समर्थन से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने |

चौधरी चरणसिंह ने 1967 में किस पार्टी का गठन किया था?

इन्होंने 1967 में कांग्रेस पार्टी छोड़ दी और अपनी खुद की राजनैतिक पार्टी बनाई जिसका नाम भारतीय क्रांति दल था |

चौधरी चरणसिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री कब बने थे?

राज नारायण और राम मनोहर लोहिया की मदद और समर्थन से वह 1976 में और 1976 में चरण सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने थे |